OUTLINE OF THE PROPOSED RESEARCH WORK

1.	Name of Scholar (शोधकर्ता का नाम)	Kanti Lal Ninama (कान्तिलाल निनामा)
2.	Title of Research (शोध का विषय)	The Historical study of Tribals of Southern Rajasthan duiring Twentieth Century: बीसवीं शताब्दी के दक्षिणी राजस्थान की जनजातीय समाज का ऐतिहासिक अध्ययन
3.	Location (स्थिति)	इतिहास विभाग, सनातन धर्म राजकीय महाविद्यालय ब्यावर, म.द. स. विश्वविद्यालय, अजमेर

4. Importance of Proposed Investigation -

दक्षिणी राजस्थान की जनजातियों ने अपनी सांस्कृतिक परम्परा, गीत, गाथा, केवते एवं नृत्य आदि धरोहरों को आज भी संजोए हुए रखा है। अनेक धार्मिक आस्थाओं और विश्वासों से प्रतिलक्षित होता है कि जनजातीय सामाजिक जीवन सोलह संस्कारों से बंधा हुआ है। जनजातियों का जीवन सामाजिक सद्भावना से ओतप्रोत है। समाज के नियमों का आदर करना प्रत्येक व्यक्ति अपना कर्तव्य समझता है। छोटे–छोटे गांवों में बसे ये जनजातीय लोग अपने आपको समाज रूपी ग्रह की भित्ती मानते है और इसे सुदृढ़ बनाने के लिए सतत् प्रयत्नशील रहते है। यद्यपि जनजातीय लोग शिक्षा की दृष्टि से कमजोर है लेकिन इनकी पारस्परिक सहयोग की भावना, परोपकार, स्वार्थ–परांगमुखता एवं जनकल्याण की प्रवृत्ति अनुकरणीय है।

दक्षिणी राजस्थान में मुख्य रूप से उदयपुर, बांसवाड़ा, डूंगरपुर, सिरोही और प्रतापगढ़ जिलों में बसी जनजातियों का सामाजिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में निरूपित किया जायेगा। बांसवाड़ा व डूंगरपुर जिले भील जनजाति

बाहुल्य जिले है। लगभग 80 प्रतिशत भील जनजाति आबादी वाला वागड़ का विशाल क्षेत्र $23^0.1$ से $24^0.1$ उत्तरी अक्षांश एवं $73^0.1$ से $74^0.1$ पूर्वी देशान्तरों के मध्य स्थित है। जातियों की विविधता और उनकी विचित्रताओं के मामलों में राजस्थान एक समृद्ध प्रदेश रहा है। जातियों का निर्माण उनकी सामाजिक प्रथायें तथा उनके आर्थिक क्रिया कलाप इतिहास में गहराई तक जड़े जमाये हुए है। भील राजस्थान की प्रमुख आदिवासी जनजाति हैं। भील शब्द का प्रयोग तमिल भाषा में 'बिल्लुवर' के रूप में हुआ है। जिसका अर्थ हैं धनुर्धारी। तीर–कमान चलाने में निपुणता प्राप्त होने से सम्भवतः भील नाम रखा गया हो। भील अपने को महादेव (शंकर) का वंशज मानते हैं। ये स्वभाव से भोले परन्तु वीर, अति साहसी एवं निडर होते है, इनमें स्वामी–भक्ति की भावना कूट–कूट कर भरी होती हैं।

भील जनजाति का फैलाव मुख्यतः देश के चार राज्यों में पाया जाता है यथा महाराष्ट्र, गुजरात, मध्यप्रदेश और राजस्थान। गुजरात राज्य में भील पंचमहल जिले में पाये जाते है। मध्यप्रदेश में भील धार, झाबुआ, खरगौन और रतलाम जिलों में पाये जाते है। राजस्थान में यद्यपि भीलों का फैलाव लम्बा–चौड़ा है। यहां तक कि वे अन्तर्राष्ट्रीय सीमा यानि बाड़मेर तक में भी पाये जाते है। लेकिन बहुतायत रूप में ये बांसवाड़ा, डूंगरपुर, उदयपुर, चित्तौड़गढ, प्रतापगढ़ और सिरोही में निवास करते है। राजस्थान के बांसवाड़ा और डूंगरपुर जिले भील बाहुल्य है।

आदिवासी भीलों का उल्लेख देश के प्राचीन धार्मिक ग्रन्थों, पुराणों, उपनिषदों और महाकाव्यों में भी मिलता है। श्रीमद्भगवद् पुराण अंग के शरीर से उत्पन्न निषाद संतान को ही **गिरिजन या वनवासी** बताता है। महाभारत में जिस एकलव्य का नाम आता है वह आदिवासी भील था। भीलों का वर्णन रामायण में भी मिलता है। राम को बैर खिलाने वाली शबरी भीलनी ही थी।

आदिकाल में भील इस क्षेत्र के अधिपति थे। आर्यों ने इन्हें जंगलों की ओर खदेड़ा। मध्ययुग में राजपूत हुकूमत को उन्होंने अंगीकार कर लिया। छठी शताब्दी से बारहवीं शताब्दी तक भीलों ने राजपूतों से बराबर टक्कर ली। ग्यारहवीं शताब्दी में प्राचीन मेवाड़ का बहुत सा भाग और मध्य भारत का उत्तर–पश्चिमी हिस्सा भीलों

के अधिकार में था। 1190 ई. के आस–पास आबु का **राजा जैतसी** मूलतः भील था। जब अकबर ने मेवाड़ पर आक्रमण किया और राणा प्रताप को चित्तौड़ के किले से हाथ धोना पड़ा, तब उनकी सुरक्षा भीलों ने अरावली पहाड़ों में की। महाराणा प्रताप के परिवार को जंगलों में बचाने का श्रेय भीलों को हैं। वही मेवाड़ के शासकों के साथ भी कालान्तर में अच्छे सम्बन्ध बनाये रखे। इस भील जनजाति का इतिहास बड़ा ही गौरवपूर्ण रहा है, एवं मेवाड़ के तत्कालीन शासक वर्ग ने इन्हें राज्य चिन्ह में स्थान प्रदान कर विशिष्ट दर्जा प्रदान किया जो आज भी मेवाड़ राज्य में दृष्टिगत होता है।

गरासिया जनजाति के लोग मुख्यरूप से उदयपुर जिले के आमेर क्षेत्र, खेरवाड़ा पंचायत समिति, कोटड़ा, फलासिया, गोगुन्दा एवं सिरोही जिले के पिण्डवाड़ा तथा आबू रोड तथा पाली जिले के बाली क्षेत्र में बसे हुए है। ये गोगुन्दा (देवला) को अपनी उत्पति मानते है, परन्तु आर्थिक कारणों से ये लोग डूंगरपुर, बांसवाड़ा, पाली तथा कोटा जिलों में जाकर बस गये है। मीणों के समान गरासिया भी स्वयं को राजपूत वंश का मानते है। लोक कथाओं के अनुसार गरासिया जनजाति के लोग यह मानते है कि ये पूर्व में अयोध्या के निवासी थे और भगवान रामचन्द्र के वंशज थे। उनके पूर्वज वहां से बैराठ (जयपुर) चले गये और यहां पर शासन किया, जहां उनके गरासिया राजा कोठोर को किसी मुगल बादशाह के हाथों मृत्यु हो गयी। ये लोग मानते है कि उनकी गौत्रे बापा रावल की सन्तान से उत्पन्न हुई थी। इनमें डामोर, चौहान, वादिया, साईदरा एवं हीरावत आदि गौत्र होते है। ये गोत्र भील तथा मीणा जाति में भी पाये जाते है।

रहन–सहन तथा वेश भूषा की दृष्टि से गरासिया जनजाति की अपनी एक अलग पहचान है। गरासिया स्त्रियां रंगीन घाघरा पहनती है। वे अपने तन–बदन को पूर्ण रूप से ढंक देती है तथा चांदी, पीतल व एल्युमिनियम के असंख्य गहने पहनती है। ये सभी जनजातीय विवाह को स्वीकार करते है वर पक्ष को दापा देना पड़ता है। पहले दापे की राशि 16 रूपये मात्र थी, जो अब बढ़कर ढाई–तीन हजार रूपये तक हो गई है। बहु विवाह का भी प्रचलन है।

गरासिया जनजाति के घर भील जनजाति के घरों की तरह ही है। जीने के तौर – तरीकों, भाषा, तीर–कमान आदि में दोनों जातियों में समानताएं पाई जाती है। इनके गांव बिखरे हुए होते है। ये गांव पहाड़ियों पर दूर छितरे हुए पाये जाते है। गरासियों के गांव 'फालिया' कहलाते है। ये लोग अपने घर प्रायः पहाड़ों की ढलान पर बनाते है। एक गांव में प्रायः एक ही गौत्र के लोग रहते है। इनकी भाषा में गुजराती, भीली, मेवाड़ी व मारवाड़ी का मिश्रण है।

रहन–सहन एवं वेश–भूषा की दृष्टि से गरासिया जनजाति की अपनी एक अलग पहचान है। गरासिया पुरूष धोती कमीज पहनते है और सिर पर तोलिया बांधते है। इनका समाज मुख्यतः एकाकी परिवार में विभक्त है। पिता परिवार का मुखिया होता है। समाज में गोद लेने की परम्परा भी प्रचलित है। इनके समाज में जाति पंचायत का विशेष महत्व है। पंचायत का मुखिया 'पटेल' या 'सहलोत' कहलाता है। पंचायत द्वारा आर्थिक व शारीरिक दोनों प्रकार के दंड दिए जाते है।

वालर, गरबा, गैर, कुदा, लूर, मोरिया व गौर गरासियों के प्रमुख नृत्य है। ये नृत्य करते समय लय और आनन्द में डूब जाते है। गरासियों की अर्थव्यवस्था कृषि, पशुपालन, शिकार एवं वनोत्पाद के एकत्रीकरण पर निर्भर है। अब ये लोग मजदूरी करने कस्बो व शहरों में भी जाने लगे है। गरासिया जनजाति के लोग गणगौर का त्योहार मनाते है। यह प्रथा दक्षिण राजस्थान की जातियों में भी प्रचलित है।

डामोर जनजाति डामोर को डामरिया भी कहते है। यह बहुत छोटा समुदाय है जो राजस्थान तथा गुजरात की सीमा पर रहता है। इस दृष्टि से देखें तो डामोर सीमावर्ती आदिवासी है। डामोर की बहुसंख्या डूंगरपुर की तहसीलों में मिलती है। डूंगरपुर के अतिरिक्त ये आदिवासी उदयपुर, चुरू तथा गंगानगर जिलों में पाये जाते है। डूंगरपुर जिले में डामोर जनजातियों की अधिकतम जनसंख्या डूंगरपुर तथा सागवाड़ा तहसीलों में निवास करती है।

मूलतः गुजराती प्रवासी होने के कारण डामोर गुजराती बोलते है। लेकिन इनकी गुजराती विशुद्ध गुजराती नहीं है। स्थानीय बोलियों के शब्दों को बहुतायत से ग्रहण करने के कारण, डामोर की गुजराती अपभ्रंश या गुजराती बन गई है। यह

गुजराती वस्तुतः गुजराती न रहकर वागड़ी बोली बन गई है। वे डामोर जो चूरू तथा गंगा नगर में रहते है, वहां की स्थानीय बालियां बोलते है।

भीलों की तरह डामोर भी छिटपुट गांवों में रहते है। गांव की सबसे छोटी इकाई फला होता है। एक गांव में सामान्यतया पांच से तेरह फले होते है। प्रत्येक फला एक गौत्र समूह है। फले के लोग आपस में रक्त सम्बन्धी होते है। फले का संस्थापक कोई पूर्वज होता है। उसी के नाम पर सामान्यतया फला जाना जाता है। कभी–कभी फले का नाम उसकी भौगौलिक विशेषता पर भी रखा जाता है।

गांव में परम्परागत सेवाओं के अतिरिक्त कुछ सामूदायिक सुविधाएं भी होती है। सामान्यतया डामोर गांव में एक स्कूल, स्वास्थ्य केन्द्र, पटवार घर, ग्राम पंचायत तथा ग्राम सेवक केन्द्र होते है। गांव में सार्वजनिक कुआं भी होता है लेकिन छिटपुट गांव में इस कूए की उपयोगिता बहुत घट जाती है। जिस फलां के इर्द–गिर्द यह सार्वजनिक कूआ या स्वास्थ्य केन्द्र होता है, उस फले को तो लाभ मिल जाता है, लेकिन अन्य फले इस सुविधा से वंचित रह जाते है।

दक्षिणी राजस्थान की जनजातियां भारत की आदिम जनजातियां है। दक्षिणी राजस्थान में भील, मीणा, गरासिया, डामोर, जनजाति की अपनी विलक्षण सांस्कृतिक धरोहर है जिसके कारण इनकी विशिष्ट पहचान है। जनजातियों की संस्कृति से हमें देश की मूल प्राचीन सांस्कृतिक धरोहर के दर्शन होते है जो आज मृत प्रायः हो गई है। विभिन्न भागों में निवास करने वाली प्रत्येक जनजाति समुदाय की अपनी अलग अलग सांस्कृतिक पहचान है तथा इनके रीति–रिवाज, सांस्कृतिक आचार–व्यवहार एवं पर्व मनाने के तरीके भी भिन्न है। अपने विशिष्ट देवी–देवता, पूजा पद्धति, पहनावा, भाषा, संस्कार, उत्सव, नृत्य, परम्परायें, प्रथायें, मेले, सजने–सवरने का तरीका भी भिन्न–भिन्न होता हैं, जो क्षेत्र विशेष को एक अलग पहचान प्रदान करता है। उदाहरण के लिए राजस्थान, मध्यप्रदेश, गुजरात एवं महाराष्ट्र में निवास करने वाले भील समुदायों की अलग–अलग पहचान है। प्रत्येक राज्य के जनजाति समुदाय की कला एवं सांस्कृतिक धरोहर अलग–अलग हैं एवं पृथक रूप से

विशिष्टता रखते हुए एक अलगाव का अहसास करवाती है एवं अपनी क्षेत्रीयता का परिचय प्रदान करती है।

5. Review of work Already done on the subject -

अतीत में संचित ज्ञान के आधार पर ही नवीन ज्ञान का सृजन किया जाता है एवं उनके आधार पर शोध परियोजना की दिशा निर्धारित की जाती है। शोध को गति प्रदान करने के उद्देश्य से वैचारिक भोजन की आवश्यकता है। अतः इस सन्दर्भ में शोध परियोजना की समीक्षा आवश्यक है।

डॉ. जगदीश चन्द्र मीणा ने (2003) ''भील जनजाति का सांस्कृतिक एवं आर्थिक जीवन'' (1858–1947 ई.), में लिखा है कि भील जनजाति का प्रारंभिक इतिहास काफी महत्वपूर्ण रहा है। छठीं शताब्दी में राजपूताना के विभिन्न राज्यों पर इसका शासन था। दक्षिणी राजस्थान में डूंगरपुर, बांसवाड़ा, कुशलगढ़, प्रतापगढ़, भीलवाड़ा और कोटा आदि राज्यों पर भीलों का आधिपत्य रहा था। सातवीं शताब्दी में भील जनजाति के सहयोग से ही मेवाड़ में बप्पा रावल का चित्तौड़ पर शासन स्थापित हुआ।

उन्होंने अपने ग्रन्थ में भील जनजाति का सांस्कृतिक परिवेश, आर्थिक व्यवस्था, इजारा प्रणाली, पाटीदारी व्यवस्था, सागड़ी प्रथा, जागीदारों एवं साहुकारों का प्रभाव, ब्रिटिश उपनिवेशवाद में वनों की स्थिति एवं प्रभाव, धार्मिक एवं सामाजिक सुधार आन्दोलन, आर्थिक दंशा सुधारने के प्रयास, प्रजामण्डलों की स्थापना आदि के बारे मे विस्तृत वर्णन किया है। भील जनजाति के सामाजिक जीवन के बारे में विस्तृत जानकारी नहीं मिलती है, अतः सामाजिक स्थिति के बारे में विस्तृत अध्ययन करना मेरे शोध का उद्देश्य है।

श्यामलदास ने (1886) में अपने विशाल ग्रन्थ 'वीर विनोद'' में मेवाड़ के साथ–साथ राजपूताना की विभिन्न रियासतों के इतिहास की विस्तृत जानकारी देने वाला एक प्रमुख स्त्रोत है श्यामलदास ने भी यत्र–तत्र भीलों का उल्लेख किया है तथा मेवाड़ के विभिन्न समुदायों का विवरण देते हुए भील जनजाति पर भी बहुत संक्षेप में

प्रकाश डाला है। श्यामलदास एक राज्य अधिकारी व दरबारी इतिहासकार था तथा उसने भीलों को हीन दृष्टि से ही देखा है।

मेजर, के.डी. अर्सकिन ने (1908) में अपनी पुस्तक ''राजपूताना गजेटियर'' खण्ड द्वितीय ए में लिखा है कि भील भारत वर्ष के सबसे पुराने निवासियों में से एक है। जिन्होंने ईसा से कई सो वर्ष पूर्व उत्तर व उत्तर पश्चिम की ओर से इस देश में प्रवेश किया। उन्होंने भील समाज पर सीमित मात्रा में प्रकाश डाला है।

ओझा, गौरीशंकर हीराचन्द ने (1928) में अपनी पुस्तक ''उदयपुर राज्य का इतिहास'' नामक पुस्तक में लिखा है कि मेवाड़ राज्य की स्थापना सूर्य वंश के गुहिल (गुहदत्त) ने की और उसी के नाम पर यह वंश गुहिल कहलाया गुहिल ईडर के भीलों के साथ रहते थे। उस समय ईडर पर मंडलीक नामक भील राजा का शासन था। भील लोग गुहिल से विशेष प्रेम रखते थे। उन्होंने उदयपुर राज्य में निवास करने वाली भील जनजाति की संक्षिप्त जानकारी दी है।

ओझा, गौरीशंकर हीराचन्द ने (1937) में अपनी पुस्तक ''राजपूताने का इतिहास'' खण्ड– 3 भाग 2, ''बांसवाडा राज्य का इतिहास'' नामक अपने ग्रन्थ में लिखा है कि बांसवाडा, डूंगरपुर और कुशलगढ में भीलों का शासन था। उन्होंने भील जनजाति के विभिन्न गौत्र, निवास स्थान, जनसंख्या, पारिवारिक स्थिति, सामाजिक संगठन एवं आर्थिक स्थिति का वर्णन किया है। उन्होंने लिखा है कि भील जाति निरक्षर थी। विभिन्न कुरीतियां समाज में व्याप्त थी और उनकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त दयनीय अवस्था में थी।

टी.बी.नायक ने (1956) में अपनी पुस्तक ''द भील्स ए स्टड़ी'' में लिखा है कि जनजाति समाज में कार्मिक अवलम्बन नगण्य होना चाहिए अर्थात वह पूर्ण स्वतन्त्र हो। समुदाय में पर संस्कृतिकरण हो सकता है। परसंस्कृतिकरण की मात्रा समाज के रीति–रिवाज, देवी– देवताओं तथा भाषा के तुलनात्मक अध्ययन से पता चलता है।

कर्नल,जेम्स टॉड ने (1965) में ''ट्रांवेल्स इन वेस्टर्न इण्डिया'' का हिन्दी अनुवाद सम्पादक गोपालनारायण बहुरा ''पश्चिमी भारत की यात्रा'' नामक पुस्तक में

राजपूताना में निवास करने वाली भील जनजाति उनके गौत्र, निवास स्थान, भौगोलिक स्थिति, सामाजिक संगठन, राजपूत–भील सम्बन्ध आदि के बारे में वर्णन किया है। उसने अपने दूसरे यात्रा विवरण में भील क्षेत्र में यात्रा करते हुए वह भीलों के रहन–सहन के अतिरिक्त इनके परम्परागत ठाकुरों के क्षेत्रों में अधिकारों का विवरण भी देता है किन्तु उसने भीलों के खान–पान व चरित्र के विषय में कुछ प्रतिकूल टिप्पणीयां भी दी है, वस्तुतः टॉड़ के इन दोनों ग्रन्थों में भीलों का विवरण बहुत संक्षिप्त में मिलता है।

शर्मा, राजीव लोशन ने (1966) में अपनी पुस्तक ''जनजातीय जीवन और संस्कृति'' में देश में निवास करने वाली जनजातियों के साथ–साथ विदेशी जनजातियों– कश्मानी, आस्ट्रेलियाई आदिवासी, बुसमैन और ऐक्सिमों संस्कृति के बारे में वर्णन किया है। इन्होंने भील जनजाति के प्रारम्भिक निवास स्थान, आर्थिक जीवन और परिवार व्यवस्था का विवरण दिया हैं। इस पुस्तक से हमें दक्षिणी राजस्थान के भील जनजाति के निवास स्थान, भौगोलिक स्थिति आदि के बारे में जानकारी मिलती हैं लेकिन यहां के भीलों के बारे में विस्तृत जानकारी का अभाव पाया गया है।

श्रीचन्द, जैन ने (1973) में अपनी पुस्तक ''वनवासी भील और उनकी संस्कृति'' में वर्णन किया है कि स्वाभिमानी भीलों का इतिहास बडा ही गौरवशाली रहा हैं। भीलों के देवी –देवताओं की संख्या काफी बड़ी है उन्होंने भीलों की वैवाहिक परम्पराएं एवं प्रथाओं, उत्सव और त्यौहार, सामाजिक संगठन, आर्थिक स्थिति आदि के बारे में वर्णन किया है, इस पुस्तक से मध्यप्रदेश के आदिवासी वनवासी भील संस्कृति के बारे में जानकारी मिलती है।

सहगल, के.के. ने (1974) में अपने ''राजस्थान डिस्ट्रिक्ट गजेटियर बांसवाड़ा'' में लिखा है कि मध्यकाल में दक्षिणी राजस्थान में एक क्षेत्र के भीलों का दूसरे क्षेत्र के भीलों के साथ किसी मतभेद के कारण लड़ाई–झगड़े होते रहते थे। ऐसे मामलों के निपटारे के लिए आदिवासी भीलों ने मिलकर एक जाति पंचायत को मान्यता दी जिसे 'भील पंचायत' का नाम दिया गया। इस पंचायत के मुखिया को गमेती, पटेल

या चौधरी कहा जाता था। भीलों के मुखियाओं को सहयोग देने के लिए एक पाल में कई भांजगड़ियें होते थे।

जैन, कुमारी सन्तोष ने (1981) मे अपनी पुस्तक ''आदिवासी भील–मीणा'' में लिखा है कि भील–मीणा एक बहादुर और देशभक्त जाति है। मेवाड़ के इतिहास की रचना में इनका अपूर्व योगदान रहा हैं। बाप्पा रावल, हमीर, कुम्भा सांगा और महाराणा प्रताप की विजयावलियां इसी जाति के सहयोग की आश्रित रही हैं। सांगा और प्रताप का वनवासी जीवन भील, मीणों के संस्कार और सत्कार का प्रतीक है। सन्तोष कुमारी ने भील जनजाति के बारे में लिखा है परन्तु दक्षिणी राजस्थान की भील जनजाति के सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास के बारे में बहुत कम जानकारी प्राप्त होती है।

दोसी, डॉ शम्भुलाल (1992) ने "राजस्थान की अनुसूचित जनजातियां" नामक ग्रन्थ में लिखा है कि गौड़ और संथाल आदिवासियों के बाद जनसख्या की दृष्टि से भील आते है। भील केवल चार राज्यों में पाये जाते है, महाराष्ट्र, गुजरात, मध्यप्रदेश, और राजस्थान। इन चारों राज्यों, की सीमा पर भील निवास करते है।

गुजरात राज्य में भील पंचमहल जिले में पाये जाते है। यह जिला आदिवासी उप–योजना क्षेत्र (Tribal sub-plan area) में आता हैं। पंचमहल जिले में कुल 10 तालुके है। गुजरात की यह आदिवासी उप–योजना पांच तालुकों में है। मध्यप्रदेश में भील, धार, झाबुआ, खरगोन और रतलाम जिलो में निवास करते है। राजस्थान में यद्यपि भीलों का फैलाव लम्बा चौड़ा है यहां तक कि वे अन्तर्राष्ट्रीय सीमा यानि बाड़मेर जिले में भी पाये जाते है, लेकिन बहुतायत रूप से ये बांसवाड़ा, डूंगरपुर, उदयपुर, चितौड़गढ़ और सिरोही के कुछ भागों में निवास करते है।

पाठक, डॉ. शोभनाथ (1986) ने अपनी पुस्तक "भीलों के बीच बीस वर्ष" में लिखा है कि भारतीय संस्कृति के संवार में भीलों का अभूतपूर्व योगदान, एक ऐसा कीर्तिमान स्थापित कर चुका है जिसकी महत्ता को आंकना आसान नही। महर्षि वाल्मीकि भी भील थे, जो रत्नाकर डाकू से "आदिकवि" की महत्ता से मंडित हुए। रामभक्त शबरी की सराहना में सभी उपमान फीके पड़ जाते है। महाभारत कथा में एकलव्य की

गुरू–भक्ति की गरीमा का जितना भी गुण गान किया जाए, थोड़ा है। एकलव्य ने अपने अगूठें का दान कर विश्व वांड़मय में अपनी वरीयता का डंका बजाकर श्रम साधना, लगन–लालसा का अनूठा आदर्श प्रस्तुत किया है, जो अनुपम द्वितीय है। महाराणा प्रताप के साथ भीलों का अक्षुण्ण पौरूष पूर्ण त्याग और बलिदान भारतीय इतिहास के पन्नों पर स्वर्णाक्षरों में अंकित है।

त्रिवेदी, डॉ. हरिवल्लभ ने (1992) में अपनी पुस्तक "जनजातीय संस्कृति तथा विकेन्द्रित आर्थिक विकास का विकल्प" में लिखा है कि स्वतत्रंता संग्राम के पुनर्जागरण युग में भी जनजातियां पीछे नहीं रही। सर्व श्री गोविन्द गुरू, मोतीलाल तेजावत, माणिक्यलाल वर्मा, गोकुल भाई भटट्, भोगीलाल पण्ड्या, सरीखे कर्मठ नेताओ की कर्मस्थली भी जनजाति क्षेत्र ही रहा है। इनके नेतृत्व में जनजातियों ने अपने अधिकारों के लिए संघर्ष किया तथा शिक्षा एवं सामाजिक विकास को आगे बढ़ाया। जनजातियों की उत्पति के बारे में ऐतिहासिक सामग्री एकत्रित कर प्रचलित धारणाओं पर अधिकारपरक प्रकाश डाला है। भील, गरासिया, डामोर, मीणा तथा सहरिया जनजातियों के सामाजिक एवं सास्कृतिक जीवन की विशेषताओं का उल्लेख किया गया है।

राठौड, अजयसिंह ने (1999) में अपनी पुस्तक ''भील जनजाति शिक्षा और आधुनिकीकरण'' में लिखा है कि भील जनजाति में शिक्षा प्रचार और जागरूकता बढ़ रही है। उनका मानना है कि भील जनजाति शिक्षा के क्षेत्र मे जागरूक हो रही है और शिक्षा प्रचार के कारण आधुनिकता का प्रभाव दृष्टिगोचर होने लगा है। भील परिवारों में शिक्षा का इतिहास शिक्षा और व्यवसाय शिक्षा और नातेदारी के बारे में भी वर्णन किया है।

पाटील, डॉ. अशोक डी ने (1998) अपनी पुस्तक ''भील जनजीवन और संस्कृति'' में भील जनजीवन, समाज व्यवस्था एवं भील संस्कृति के बारे में लिखा है, परन्तु दक्षिणी राजस्थान के भील समाज एवं संस्कृति के बारे में सीमित मात्रा में वर्णन मिलता है।

भाणावत, डॉ. महेन्द्र ने (1993) में अपनी पुस्तक "उदयपुर के आदिवासी" नामक पुस्तक में भील उदभव एवं विकास भील समाज और संस्कृति, भीली लोकगीतों में जीवंत चेतना, झांड़ फुंक, तंत्र–मंत्र और गवरी नाट्य का वर्णन किया है, परन्तु इस पुस्तक में समग्र भील जाति के विभिन्न पक्षों के अध्ययन का अभाव हैं। यह अध्ययन उदयपुर जिले के भीली क्षेत्र तक सीमित है।

भट्ट, डॉ. नीरजा ने (2007) में अपनी पुस्तक "18वीं व 19वीं शताब्दी में राजस्थान का भील समाज" में लिखा है कि जनजातीय इतिहास का अध्ययन बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि जनजातीय लोग अपने–अपने प्रदेश के मूल निवासी रहे है तथा उनके समाज के विभिन्न पक्षों का अध्ययन संबंधित प्रदेश के इतिहास व सामाजिक संरचना को समझने के लिये अति आवश्यक है। राजस्थान के भील समाज की भी इस प्रदश के इतिहास में विशिष्ट भूमिका रही है। उन्होंने यहां के इतिहास को प्रभावित किया है और वे यहां के समाज व संस्कृति के अविभाज्य अंग रहे है। यद्यपि भील राजस्थान के प्राचीनतम निवासियों में से है फिर भी प्राचीन साहित्य शिलालेखों, सिक्कों या किसी अन्य स्त्रोत में इस जनजाति का कोई लिखित इतिहास प्राप्त नही होता। विभिन्न स्थानों पर इनका उल्लेख मात्र ही हुआ है, उसी से हमें भील इतिहास को पुनः निर्मित करना पड़ता है।

उपर्युक्त लेखकों ने अपने भिन्न–भिन्न अध्ययनों में अध्ययनकाल की जनजातियों के सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन का अध्ययन 19वीं शताब्दी तक ही करने का प्रयास किया है। जबकि मेरे द्वारा प्रस्तुत किये जाने वाले शोध अध्ययन में 19वीं शताब्दी से लेकर 21वीं शताब्दी ई. तक की शताब्दियों में शिक्षा, कला, साहित्य, परम्परा के क्षेत्रों में जो परिवर्तन आया है उसका तथा उसके प्रेरक तत्वों का विश्लेषण करना है। मेरे द्वारा प्रस्तुत शोध अध्ययन में एक तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया जायेगा जिसका पूर्ववर्ती अध्ययनों में अभाव पाया गया है।

6. Research Gaps Indentified in the Proposed Field of Investigation -

21वीं सदी में भील समुदाय की अपनी एक अलग विशिष्ट पहचान है जो कि इनकी परम्परागत सांस्कृतिक धरोहर के जीवन दर्शन कराती है। इनका सामाजिक

जीवन, पूजा–पद्धति एवं पूजा स्थल जो कि देवरे कहलाते है एक अलग पहचान रखते है। गवरी दक्षिणी राजस्थान में निवास करने वाली जनजातियों की एक विशेष नृत्य नाटिका है जो इनकी धार्मिकता एवं सांस्कृतिक कला का जीता जागता नमूना है। आज व्यथा यह है कि इनकी आर्थिक स्थिति दयनीय है। सामाजिक संगठन कमजोर होते जा रहे है। संस्कृति भी संक्रमण के दौर से गुजर रही है। आज आवश्यकता इस बात की है कि इनका विकास विलक्षण सामाजिक एवं सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित करते हुए किया जाए अन्यथा इनकी परम्परागत सांस्कृतिक पहचान आने वाले कुछ वर्षो में ही समाप्त हो जायेगी।

दक्षिणी राजस्थान में निवास करने वाली जनजातियों का अपना गौरवशाली इतिहास रहा है किन्तु अधिकांशतः यह किंवदंतियों के रूप में है। इनके इतिहास को उजागर करना भी प्रस्तुत शोध का महत्व है।

जनजाति समाज में सांस्कृतिक जन जीवन में रूचि रखने वाले जिज्ञासु के लिए एक ऐसा सम्मोहन है, जिसकी सामग्री की सम्पन्नता और विविधता की समानता देश के अन्य क्षेत्र से नहीं की जा सकती है। अतः इस अध्ययन को करने का मुख्य कारण सूचीबद्ध ग्रन्थों के आधार पर जनजाति समाज के सांस्कृतिक जीवन को उजागर करना। साथ ही इनकी संस्कृति को रेखांकित करना। पूर्ववर्ती अध्ययनों में तुलनात्मक अध्ययन नहीं मिलता। अतः प्रस्तुत शोध अध्ययन में इस कमी को पूरा किये जाने का प्रयास किया जायेगा।

7. Objectives -

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध को उद्देश्य की दृष्टि से निरूपित करने पर ज्ञात होता है कि स्वतंत्रता के पूर्व जनजातियों का बलिदान, बलिदानों के एवज में स्वतंत्रता के पश्चात् उन्हें प्राप्त विशेषाधिकारों एवं सुविधाओं के आंकलन के साथ ही सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तनों ने जनजाति समाज एवं संस्कृति को अनेक समस्याओं से पीड़ित एवं ग्रसित किया है, उनके हल का मूल्यांकन करना एवं विकल्प प्रस्तुत करना भी शोध परियोजना का उद्देश्य हैं।

(1) जनजातियों के मूल स्वरूप, संस्कृति एवं जीवन मूल्यों को ऐतिहासिक परिपेक्ष्य में उजागर करना। दक्षिणी राजस्थान की जनजातियों के इतिहास को भारतीय इतिहास में उचित स्थान दिलाने हेतु क्षेत्रीय जनजाति समाज को रेखांकित करना।

(2) जनजाति समुदाय भारत की सभ्यता एवं संस्कृति का संवाहक रहे है। प्रस्तुत शोध में जनजातियों के सांस्कृतिक इतिहास को रेखांकित करते हुए इनके संस्कृति के संक्रमण में सहायक रहे ऐतिहासिक कारणों को समग्र रूप से प्रस्तुत करना।

(3) जनजातियों की सांस्कृतिक एवं सामाजिक संरचना में होने वाले परिवर्तनों का अध्ययन करना।

(4) जनजाति समाज में पिछले दो–तीन दशकों में बहुत बड़ा परिवर्तन होता दिखाई दे रहा हैं। संचार, आवागमन, शहरीकरण, आधुनिकरण, उदारीकरण, भूण्डलीकरण, शिक्षा, योजनाबद्ध विकास कार्यक्रम और औद्योगिकरण ने इनके जीवन में आमूल–चूल परिवर्तन के अवसर उपस्थित किये है। इन परिवर्तनों का जनजातियों के सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में परिलक्षित प्रभावों का अध्ययन करना।

(5) जनजाति समुदाय की सामाजिक–सांस्कृतिक गतिशीलता पर आधुनिकीकरण के प्रभावों का अध्ययन करना।

(6) सदियों से विकास के दौर में पिछड़ी हुई जनजातियों के लिए आजादी के पश्चात् उनमें परिवर्तन के लिए शासकीय एवं गैर शासकीय प्रयास आरंभ हुये। परिणामस्वरूप 20वीं शताब्दी के आते–आते उनके परिणाम परिलक्षित होने लगे। उन परिवर्तनों से जनजाति समाज विकास के दौर में कितनी प्रगति कर पाया है, उनको रेखांकित करना इस शोध का प्रमुख उद्देश्य है।

8. Major Hypothesis -

जनजाति समुदाय के सांस्कृतिक जीवन पर पृथक से कार्य नहीं हुआ है। जनजाति जीवन से सम्बन्धित अनेक विषयों पर कार्य किया गया है। जिसमें जनजाति के समाज, संस्कृति, कला आदि पर किये कार्यों में अल्प मात्रा में वर्णन प्राप्त होता है। इस अध्ययन के द्वारा जनजातियों के सांस्कृतिक जीवन को समग्र रूप में प्रस्तुत किया जायेगा। जनजाति समुदाय के सांस्कृतिक जीवन के सम्बन्ध में कुछ प्राकल्पनाएं इस अध्ययन में इस प्रकार की गई है। जिसकी जांच पड़ताल अथवा इनका परीक्षण निम्न तथ्यों के प्रकाश में किया जायेगा –

(1) जनजाति समाज का सामाजिक जीवन परस्पर सहयोग व सामुदायिकता पर आधारित है। परन्तु वर्तमान में अलगाववाद के लक्ष्य दृष्टिगोचर हो रहे है, इसके कारणों का पता लगाना।

(2) जनजाति संस्कृति संक्रमण के दौर से गुजर रही है। इनकी संस्कृति को सुरक्षित रखने की दिशा में सुझाव प्रस्तुत करना।

(3) वर्तमान में संयुक्त पारिवारिक जीवन में विघटन की स्थिति उत्पन्न हो रही है। ऐसे कौन से कारण है जो विघटन को बढ़ावा दे रहे है, उनके बारे में अध्ययन करना।

(4) समाज सुधारकों की शिक्षाओं का प्रभाव जनजाति समाज पर किस हद तक पड़ा है, उनका अध्ययन करना।

(5) जाति पंचायत संगठन वर्तमान में अपना अस्तित्व खोते जा रहे है, ऐसे कौन से कारण है जो जाति पंचायत संगठन को कमजोर कर रहे है, उनका अध्ययन करना।

(6) जनजाति समाज का सांस्कृतिक जीवन व संगठन अन्य जातियों की अपेक्षा किस तरह भिन्न है। वर्तमान में अन्य जाति समाजों के साथ सम्बन्धों का अध्ययन करना।

(7) जनजातियों में हुये सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक परिवर्तनों को रेखांकित करना।

9. Materials and Methods -

कोई भी शोध कार्य उसके वैज्ञानिक शोध विधि पर आधारित होता है, इतिहास विषय के अन्तर्गत वैज्ञानिक शोध संभव है, जिसमें कई विधियों द्वारा अध्ययन किया जा सकता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में तथ्यों का संकलन प्राथमिक व द्वितीयक दोनों ही प्रकार के समंकों के माध्यम से किया जायेगा। समंक संग्रहण हेतु निम्न विधियों का सहारा लिया जायेगा।

(1) प्रत्यक्ष व्यक्तिगत अनुसंधान क्षेत्र अवलोकन।

(2) साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से।

(3) प्रश्नावली।

(4) संकलित तथ्यों का अन्वेषण करके।

(5) सरकारी संदर्भ ग्रन्थों, गजेटियर आदि से तथ्यों का एकत्रीकरण।

(6) प्रकाशित एवं अप्रकाशित ग्रन्थों से तथ्यों का संकलन।

प्राथमिक व द्वितीयक समंकों से तथ्य संकलन निम्न प्रकार किया जाएगा –

(अ) प्राथमिक समंकों का संकलन –

प्राथमिक समंक क्षेत्र अध्ययन द्वारा प्राप्त किए जाएंगे। जनजाति समुदाय के सांस्कृतिक एवं सामाजिक जन–जीवन व ऐतिहासिक तथ्यों सम्बन्धी अवधारणा के बारे में जानकारी प्राप्त की जाएगी।

प्राथमिक समंकों का संकलन दैव–निदर्शन पद्धति के आधार पर निम्न प्रकार किया जाएगा –

1. अध्ययन में बांसवाड़ा, डूंगरपुर, उदयपुर, प्रतापगढ़ एवं सिरोही जिलों में निवास करने वाली जनजाति के 200 उत्तरदाताओं का चयन किया जायेगा।

2. प्रत्येक जिले से दो–दो तहसीलों का चयन दैव–निदर्शन पद्धति के आधार पर किया जायेगा और प्रत्येक तहसील से दो–दो गांवों का चयन किया जायेगा। चयनित उत्तरदाताओं से जनजाति समाज के सांस्कृतिक जीवन से सम्बन्धित सूचनाएं एकत्रित कर विश्लेषण किया जायेगा।

(ब) द्वितीय समंकों का संकलन –

द्वितीय समंकों का संकलन हेतु अध्ययन से सम्बन्धित सूचनाएं मुख्यतः पत्र–पत्रिकाओं, समाचार पत्रों, प्रकाशित व अप्रकाशित शोध ग्रन्थों, विभिन्न गजेटियरों व प्रतिवेदनों के माध्यम से प्राप्त किये जायेगे।

प्रस्तुत शोध कार्य में तथ्यों का सांख्यिकीय विश्लेषण करने हेतु प्रतिशत, अनुपात, औसत वृद्धि, दर सह–सम्बन्ध परीक्षण आदि सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया जाना प्रस्तावित है। प्राप्त निष्कर्षों को तालिकाओं, मानचित्रों, रेखाचित्रों, ग्राफ आदि के माध्यम से प्रकाशित किया जाएगा।

10. Tentative Chapterwise details of the Proposed Research

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध को निम्नलिखित अध्यायों में विभक्त किया गया है –

(1) दक्षिणी राजस्थान का भौगोलिक परिचय।
(2) दक्षिणी राजस्थान की प्रमुख जनजातियां।
(3) जनजातीय समाज का सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन।
(4) जनजातीय सामाजिक संगठन एवं परिवर्तन का युग।
(5) जनजातीय समाज पर परिवर्तनों का प्रभाव।
(6) जनजातीय समाज की समकालीन स्थिति।
(7) उपसंहार।

11. शोध कार्य हेतु उपलब्ध सुविधाएं –

(1) संदर्भ ग्रन्थ, प्रकाशित एवं अप्रकाशित शोध ग्रन्थ, पत्र–पत्रिकाएं, समाचार पत्र, विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं के प्रतिवेदन।

(2) महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर।

(3) माणिक्यलाल वर्मा आदिम जाति शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान, अशोक नगर, उदयपुर।

(4) मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर।

(5) जिला सार्वजनिक पुस्तकालय–बांसवाड़ा, डूंगरपुर, उदयपुर, अजमेर

(6) राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर।

(7) जनार्दनराय नागर, राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर।

(8) जिला सूचना केन्द्र– बांसवाड़ा, डूंगरपुर, उदयपुर, अजमेर,

(9) राजस्थान साहित्य ग्रन्थागार, जोधपुर।

(10) राजस्थान हिन्दी साहित्य अकादमी, उदयपुर।

12. Bibliography -

1. ORIGINAL RECORDS –

District Archives (Bakhikhana), Udaipur .

Manuscript Records of the oriental Research Institue, Branch office, Udaipur.

Private Collection of Dr. Brij Mohan Javaliya, Udaipur.

Private Collection of Dr. Girish Nath Mathur, Udaipur.

Records of the mewar & Southern Rajasthan States Agency (National Archives of India).

2. OFFICIAL RECORDS –

Census of India 1891, Vol-xxvi, Rajputana Part I, Calcutta, 1892.

Cenus of Inadia 1901 Vol-xxv, Rajputana Part I, Lucknow, 1902.

Erskine, K.D. (1908), Rajputana Gazetteers, Vol- II A, the Mewar Residency, Ajmer.

Erskine, K.D. (1908), Rajputana Gazetteers, Vol- II B, the Mewar Residency, Ajmer.

Gazetter of the Bombay, Presidency, Vol-xii (Khandesh) Govt. Central Press, Bombay, 1880

Malcolm , John : (1927) Report on the Province of Malwa and Adjoining Districts submitted of the supem Government of British India, Govt. of Inadia Central Publication Branch, Calcutta.

Vate, C.F. (1879) Rajputana Gazetteers, Vol- III, Calcutta.

3. CONTEMPORARY BOOKS & ARTICLES

Malcolm, John (1970 A Memoir of Central India Including Malwa, Vol-II Sagar Publication, Ved Mension, 72 Janapath, New Delhi.

Sherring, M.A. (1975) " The Tribes and castes of Rajathan Reprint, cosmos publication, Delhi (First Published, 1881)

Showers, C.L. (1888) Missing Chapter of the Indian Mutiny, Longmans Green & Co. London.

Tod, James (Ed. By Willian Crooke,1987, – Annals & Antiquities of Rajasthan In 3 Vols, Reprint, Motilal Banarsidass, Delhi (First Published, 1920)

Hendley. T.H. (1875) An Account of the Mewar Bhils, Journal of Asiatic Socity of Bengal, Vol-44 Nos 1-4-1875.

टॉड, जेम्स (मू.ले.) बहुरा गोपाल नारायण (1965) अनु. ''पश्चिमी भारत की यात्रा'' राजस्थान पुरातन ग्रंथमाला, ग्रन्थांक 80, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान जोधपुर,

श्यामलदास, कविराजा (1886) '' वीर विनोद, मेवाड़ का इतिहास'' प्रथम भाग एवं द्वितीय भाग, खण्ड 1 से 3 (चार जिल्दों मे सम्पूर्ण) प्रथम मुद्रण, राजयंत्रालय, उदयपुर 1886 पुनर्मुद्रण–मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।

4. OTHER BOOKS -

Carstairs, George, Shepherd at Udaipur and the Land he Loved Hadder and stoughton Ltd. London, 1926.

Chattopadhyay, Kamla devi : Tribalesm in India, Vikas Publishing House, Pvt. Ltd. New Delhi 1978.

Doshi. S.L. : More on Feudalesm and Subaltern Tribals, Himanshu Publication , Udaipur, 1997.

Dosi, S.L. Bhils : Between social self Awarenes & Pvt. Ltd. New Delhi, 1971

Enthoven, R.E. : The Tribes and Caste of Bombay, Vol-I First Published, 1920 Repsint, Cosmo Publications, Delhi, 1975

Gupta, K.S. Mewar and The Maratha Relations (1935-1818 A.D.) S. Chand & Co. (Pvt.) Ltd. 1971, New Delhi.

Jain, Prakash Chandra : Social Movements Among Tribals, Rawal Publications, Jaipur, 1991.

Khotari, K.L. : Tribal Social Change in India, Himanshu Publications. First Edition, Udaipur, 1995.

Mathur, L.P. : movements of tribals during the clonial rule : Role of Ideologies, Inter-India publications, 1995.

Naik, TB. : Impact of Eudcation on the Bhils, Research programme comittee, planing commission, Dew Delhi, 1969.

Naik, T.B. The Bhils : A study, Bhartiya Adim Jati Sewak Sangh, 1956.

Prasad, A.K. : The Bhils of khandesh, Konark publishers Pvt. Ltd. Delhi, 1991.

Russel & Hiralal : Tribes and castes of the central province of India, Vol II, macmillan and Co. Limited, London, 1916

Sharma. B.K. Tribal Revolts, pointer publishers, Jaipur, 1996

Sharma, G.N. & Social and Political Awakening among the Tribals of Rajasthan, Centre for Rajasthan studies. University of Rajasthan, Jaipur

Singh C.S.K. : Tribal movement in Rajasthan, manak Publishers, New Dehi, 1995

Singh K.S. : Tribal movement In India, Vol. 2, Manohar, New Delhi 1982.

Srivatava. A.R.N. : The Tribal Freedom Fighters of India. Publications Division, Ministry of Information & Broadcasting, Govt. of India, New Delhi 1986

Varma, S.C. : The Bhil Kills, Kunj publishing House, Rajhushree complex, Delhi, 1978

Vashishtha. V.K. : Bhagat movement, study of cultural transformation of the Bhil of Southern Rajasthan, Shruti Publications Pvt. Ltd. Jaipur 1997

Vyas, N.N. Mann. R.S. & Choudhary, N.D. (Eds) : Rajasthan Bhils, Manikyalal Verma Tribal Research and Traning Institute, Udaipur, 1978

ओझा, गौरीशंकर हीराचंद : उदयपुर राज्य का इतिहास प्रथम व द्वितीय खण्ड, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर (नवीनतम संस्करण), 1994

ओझा, गौरीशंकर हीराचंद : राजपुताने का इतिहास, खण्ड III भाग III, प्रतापगढ़ राज्य का इतिहास, वैदिक यंत्रालय, अजमेर, 1941

ओझा, गौरीशंकर हीराचंद : राजपूताने का इतिहास, खण्ड III, भाग II, बांसवाडा राज्य का इतिहास, वैदिक यंत्रालय, अजमेर (प्रथम संस्करण), वि.सं. 1993

ओझा, गौरीशंकर हीराचंद : डूंगरपुर राज्य का इतिहास, वैदिक यंत्रालय, अजमेर (प्रथम संस्करण), वि.सं. 1992

कांकरिया, प्रेमसिंह : भील क्रांति के प्रणेता : मोतीलाल तेजावत, राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर, 1985

काले, सुश्री मालिनी : भील संगीत और विवेचन हिमांशु पब्लिकेशन, उदयपुर, 1987

कोठारी (डॉ.) देव (संपा) : स्वतंत्रता आन्दोलन में मेवाड़ का योगदान, साहित्य संस्थान, राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर 1991

गहलोत, जगदीशसिंह : राजपूताने का इतिहास, पहला भाग, हिन्दी साहित्य मन्दिर, जोधपुर, प्रथम संस्करण 1937

जैन, प्रेम सुमन : कुवलयमाला का सांस्कृतिक अध्ययन, प्राकृत शोध संस्थान, वैशाली, 1975

जैन, श्रीचन्द : ये वनवासी भील, वनवासी भील और उनकी संस्कृति, रोशनलाल जैन एण्ड सन्स, जयपुर द्वितीय संस्करण 1974

तिवारी डां. शिवकुमार :मध्यप्रदेश के आदिवासी, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, प्रथम संस्करण, भोपाल, 1984

दोसी, डां. शम्भुलाल एवं व्यास डां. नरेन्द्र एन : राजस्थान की अनुसूचित जनजातियां, प्रथम संस्करण, हिमांशु पब्लिकेशन्स, उदयपुर, 1992

पलात, रामचन्द्र : राजस्थान की वनविहारी जनजातियां, श्री नीलकमल पलात एण्ड ब्रदर्स, पाल झोंथरी भीण्डा, जिला–डूंगरपुर (राज.), 1987

भट्ट राजेन्द्र शंकर : महाराणा प्रताप, नेशलन बुक ट्रस्ट इण्डिया, द्वितीय संस्करण, नई दिल्ली, 1990

भानावत डॉ. महेन्द्र : उदयपुर के आदिवासी, भारतीय लोक कला मण्डल उदयपुर, 1993

भील, श्री फूल जी भाई (संपा.) राजस्थानी भीलों के लोकगीत, लोक साहित्य विभाग, साहित्य संस्थान, राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर 1954

मेहता, जोधसिह, आदिनिवासी भील, साहित्य संस्थान, राजस्थान विश्व विद्यापीठ उदयपुर, 1954

याज्ञिक, नवीनचन्द (ले.संपा.) सन्त मावजी, सन्त मावजी कृत आधार ग्रन्थ "रतनसागर" प्र.सं. सेन्टर पब्लिकेशन्स, अहमदाबाद, 1986

व्यास, नरेन्द्र (संपा.) भील (सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में) त्रैमासिक शोध पत्रिका ट्राइब का विशेषांक वर्ष 11, अंक 2.4.1979, माणिक्यलाल वर्मा आदिम जाति शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान, राजस्थान, उदयपुर

सोमदेव : कथासरितसागर, निर्णय सागर प्रेस, मुम्बई, चतुर्थ संस्करण, 1930

शर्मा, उत्सवलाल (संपा.) पद्मभूषण भोगीलाल पण्ड्या स्मृतिग्रन्थ भाग । रियासत डूंगरपुर में राजनैतिक संघर्ष, गांधी आश्रम, डूंगरपुर, 1986

शर्मा, गिरधारीलाल (संपा.) : राजस्थानी भील गीत, भाग 2–3, साहित्य संस्थान, राजस्थान विश्वविद्यापीठ, उदयपुर, 1956

शर्मा, सुन्दरलाल : संत मावजी व्यक्तित्व और कृतित्व, हिमांशु पब्लिकेशन्स उदयपुर (प्रथम संस्करण), 1990

5. ARTICLES IN RESEARCH JOURNALS

Ahuja, Manohar. Crime and control among Bhils. Tribe. The Bulletion of The TRI, Udaipur, Vol. III No. 1.2.1966

Carstairs, Morris : The Bhil of Kotra Bhomat, the Eastern Anthropologist, VII 3& 4, 1954

Chouhan, Bmij Raj : Tribalization, Tribe. Vol II, No. 12 April, 1966 Tribal Research Institute, Udaipur (Raj.)

Goyal, Om Prakash : The Bhil Bhopa, Tribe, the Bulletin of Tribal Research Institute. Udaipur, Vol. III No. 1, October, 1966.

Mathur, K.C. : charistian Missionaries & Education in Mewar State.

शोध पत्रिका, वर्ष 33, अंक 2, अप्रेल–जून 1982 साहित्य संस्थान, राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर

शोध पत्रिका, आदिवासी शोध साधना, वर्ष 1, अंक प्रथम अक्टू. दिसम्बर 2009 आदिवासी विकास शोध संस्थान, सागवा, बांसवाड़ा (राज.)

Roy.Sc : The Black Bhils of Jaisamand Lake In Rajputana, Journal of Bihar & Orissa Research Society, X, 1924

Vashista. Vijay K. : Beneshwar fair– A symbol of Tribal Unity, Devotiton and Tradition Lok_Rang, National Cultural Festival, Jawahar Kala Kendra, Jaipur, 1995.

V. Vas, Narendra Nath : Kherwara – A Town in Tribal setting, Tribe, Vol 1No. 1October, 1964 T.R.I. Udaipur.

कोठारी डां. देव : भील आन्दोलन : पृष्ठभूमि और स्वतंत्रता संग्राम, शोध पत्रिका, वर्ष 37, अंक 3–4, जुलाई–दिसम्बर 1986, साहित्य संस्थान, राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर

जैन भगवतीलाल : स्वतंत्रता आन्दोलन में भगत आन्दोलन का योगदान, शोध पत्रिका वर्ष 34अंक 3.4.1984 साहित्य संस्थान, राजस्थान विद्यापीठ

पारिक भूपेन्द्रनाथ : कुशलगढ़ क्षेत्र में भील परिवार, ट्राइब द बुलेटिन ऑफ टी.आर.आई. उदयपुर, खण्ड 1 सं. 1 अक्टूम्बर 1964

रोत, डां. हरीशचन्द्र : वागड़ के सन्तों द्वारा आदिवासियों का सांस्कृतिक पुनरूत्थान, अरावली उद्घोष, अप्रैल 1989

6. **पत्र–पत्रिकाएं –**

शोध साधना, नटनागर शोध संस्थान, सीतामऊ, म.प्र.

शोध पत्रिका, त्रैमासिक, उदयपुर (राज.)

नवजीवन–साप्ताहिक / त्रैमासिक

सज्जन कीर्ति सुधाकर (मेवाड़ गजट, 1930–48 ई.)

नवज्योति (दैनिक)

ट्राइब (त्रैमासिक) टी.आर.आई, उदयपुर।

राजस्थान पत्रिका (दैनिक)

वागड़ दूत (साप्ताहिक)

सेवा संघ, डूंगरपुर (राज.)

आदिवासी मॉर्डन रिव्यू (फरवरी 1927 ई.)

चौमासो–म.प्र. आदिवासी लोक परिषद्, भोपाल

जागती जोत–राजस्थान भाषा साहित्य अकादमी, बीकानेर

मधुमती–राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर

राजस्थान भारती–बीकानेर

दैनिक भास्कर – (दैनिक)

राजस्थान जनसम्पर्क विभाग द्वारा समय–समय पर प्रकाशित एवं बुलेटिन (बांसवाड़ा–डूंगरपुर–उदयपुर जिला)

अनुसूचित जातियों, जनजातियों के आयुक्त की रिपोर्ट

जर्नल ऑफ सोशियल रिचर्स, 1985 ई. (समाज कल्याण विभाग, उदयपुर) लेख–भक्ति आन्दोलन (श्री नारायणचन्द्र भटनागर)

7. व्यक्तिगत संस्मरण

(i) भील गुलाबजी भाई राठौड़, अध्यक्ष वागड़ वाल्मिकी भील समाज संस्थान, बांसवाड़ा (राज.)

(ii) रामलाल महाराज, हरिमन्दिर, परतापुर, बांसवाड़ा।

(iii) कुरिया भगत, सुराणा धाम, डूंगरपुर (राज.)

(iv) कुरीया भगत् सुराना धाम, डूंगरपुर (राज.)

(v) डां. पूरणमल यादव, प्रोफेसर समाज शास्त्र विभाग, मो.ला. सु.वि.वि. उदयपुर (राज.)

(vi) नाथुलाल भगत, अरथूना धाम, बांसवाड़ा (राज.)

(vii) डां. वेलाराम घोघरा, समाज सेवी एवं भील संस्कृति के अध्येता, डूंगरपुर (राज.)

OUTLINE APPROVED

19/5/16
(Dr M.L. Sharma)

SUPERVISER

(Dr. M.L. SHARMA)

19/5/2016

SCHOLAR

(KANTI LAL NINAMA)

इतिहास विभाग

सनातन धर्म राजकीय महाविद्यालय, ब्यावर

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय,

अजमेर (राज.)